सूरज और मुरगा

(कविता)

11

कई बार हमने देखा है
मुरगा बाँग लगाता जब
पूरब में मुस्काता सूरज
धीर-धीरे आता तब।

इसी बात से लगा सोचने–
सूरज को लाता हूँ मैं
बाँग लगाकर रोज सुबह
इस सूरज को चमकाता मैं।

और बात फिर सोची उसने
कल सोऊँगा मैं जी भरकर
बाँग नहीं मैं दूँगा तड़के
सूरज आएगा क्यों कर?

मुरगा सोया पागल जैसा
सूरज आया ठीक समय
रंग-रँगीले फूल खिल गए
गूँज उठी चिड़ियों की लय।

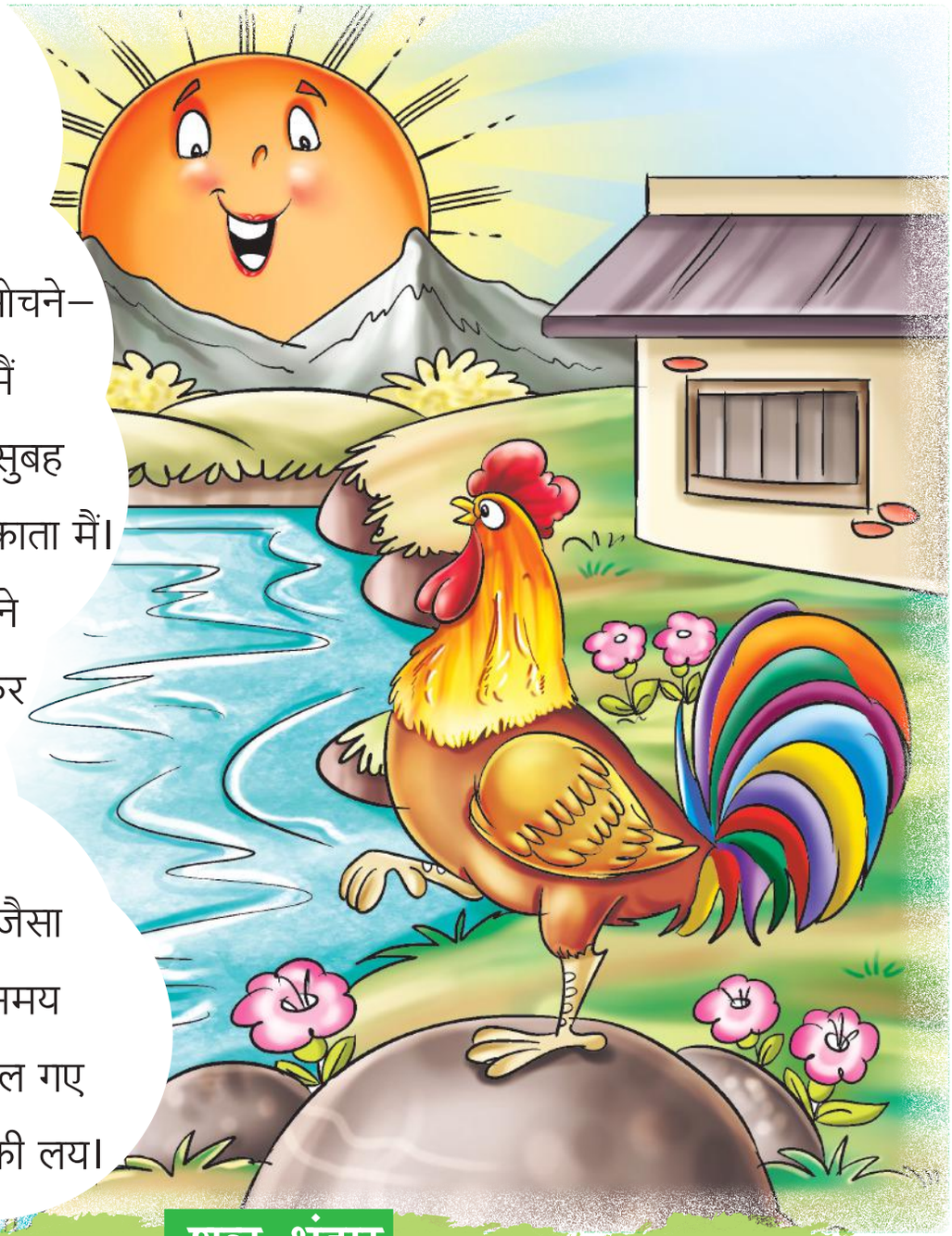

शब्द-भंडार

बाँग — मुरगे की आवाज *(cluck)*,
रोज — हर दिन *(every day)*,
जी — मन *(psyche)*,
तड़के — बहुत सुबह *(early morning)*,
रंग-रँगीले — कई रंग के *(colorful paint)*,
लय — मधुर आवाज में गाना *(rhythm)*।

कविता का भावार्थ – प्रस्तुत कविता में कवि ने सूरज के उगने और मुरगे की बाँग के विषय में बताया है। हम कई बार देखते हैं कि जब सुबह के समय मुरगा बोलता है तब पूरब की ओर से धीरे-धीरे सूरज चमकता है। यह सब देखकर ही मुरगा सोचने लगा कि मेरे बाँग लगाने से ही सूरज आकर चमकता है। मुरगे ने सोचा कि मैं कल को जी भरकर सोऊँगा और देर से उठूँगा। जब मैं सुबह बाँग ही नहीं दूँगा तो फिर सूरज कैसे चमकेगा। उस रात मुरगा पागलों की तरह सो गया। सूरज अपने ठीक समय पर आया। उसके आने से फूलों की कलियाँ खिल गईं और पक्षियाँ चहचहाने लगे।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

बाँग मुसकाता चमकाता सोऊँगा तड़के

रंग-रँगीले गूँज

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) सूरज कहाँ से आता है?

(ख) सूरज कैसे आता है?

(ग) मुरगा क्या सोचने लगा?

(घ) मुरगा कब बाँग लगाता है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) रोज सुबह बाँग कौन लगाता है?

☐ मोर ☐ कोयल ☐ मुरगा

(ख) फूल कैसे खिल गए?

☐ रंग-रँगीले ☐ लाल रंग के ☐ सफेद रंग के

(ग) किसकी लय गूँज उठी?

☐ कलियों की ☐ सूरज की ☐ चिड़ियों की

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मुरगा क्यों नहीं जागा?

(ख) मुरगे ने बाँग नहीं दी फिर भी सूरज क्यों आया?

(ग) सूरज के आने पर क्या-क्या हुआ?

3. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

मुरगा सोया .....

..... ठीक समय

रंग-रँगीले .....

गूँज उठी .....।

भाषा-ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए।

मुरगा	–	मुरगे	चिड़िया	–	चिड़ियाँ
छाता	–	छाते	चुहिया	–	चुहियाँ
गमला	–	गमले	गुड़िया	–	गुड़ियाँ

2. मात्राओं का खेल।

दिए गए अक्षरों में मात्राएँ बदलकर नए शब्द बनाइए।

त	ल	.....	.....	.....	.....
ब	ल	.....	.....	.....	.....
क	ल	.....	.....	.....	.....
म	ल	.....	.....	.....	.....

क्रियात्मक गतिविधि

- सुबह के चित्र पर पाँच वाक्य बोलिए और लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....